Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 7, December-2021, ISSN 2230-7540

शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यायलों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन: बिजनौर जनपद के सन्दर्भ में

आरती शुक्ला[1]*, डॉ. एस. के. महतो[2]

[1] शोधार्थी, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय,उत्तर प्रदेश

[2] शोध पर्यवेक्षक, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय,उत्तर प्रदेश

सार - *शिक्षा का उद्देष्य अच्छे मानव का विकास करना है। जो व्यक्ति के शरीर, विचारो तथा व्यक्तित्व को इस प्रकार विकसित कर सके कि वह स्वयं के लिए लाभदायक हो तथा अन्य लोगों को भी लाभ पहुंचाए। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहता हुआ ही वह अपने जीवन की विभिन्न क्रिया कलापों को सम्पन्न करता है। ऐसे में वह अपने आस-पास के सामाजिक वातावरण को भी प्रभावित करता है। शिक्षा के माध्यम से हम व्यक्ति के व्यक्तित्व में ऐसे गुणों को विकसित, पुष्पित तथा पल्लवित करें कि वह भी अपने व्यक्तित्व को साथ-साथ सम्पूर्ण मानव जाति, समाज, तथा राष्ट्र का पूर्ण रूप से विकास कर सके। मूल्यपरक शिक्षा का ध्येय व्यक्ति को सहायता प्रदान करना है जिससे कि वह कार्य करने के लिए स्वतंत्र और प्रभावशाली व्यक्तित्व का विकास कर सकें तथा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक जीवन में सृजनात्मक रूप से भागीदारी निभा सके। मूल्यपरक शिक्षा व्यक्ति को यह क्षमता प्रदान करती है कि वह शीघ्रता से बदलते हुए सामाजिक जीवन का मुकाबला कर सकें तथा वैज्ञानिक आविष्कारों तथा जनसंचार से उत्पन्न समस्याओं के लिए तैयार हो सके और विश्व की समस्याओं के प्रति राष्ट्रीय दृष्टिकोण की अपेक्षा सार्वभौमिक दृष्टिकोण अपना सके। अतः इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर हमनें "प्राथमिक विद्यालय स्तर पर बिजनौर जनपद के शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन" विषय को हमने अपने शोध अध्ययन का शीर्षक बनाया है। प्रस्तुत अध्ययन में बिजनौर जनपद के शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन सर्वेक्षण विधि के माध्यम से किया है, जिसमें उनके समग्र मूल्य, सैद्धांतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य एवं धार्मिक मूल्यों का अध्ययन किया है, जो इस प्रकार है।*

कुंजीशब्द - *मूल्य शिक्षा, समग्र मूल्य, सैद्धांतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य एवं धार्मिक मूल्य।*

----------X----------

भूमिका -

प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देष्य ज्ञान को अर्जित करना, संग्रहित करना, रचित करना, प्रसारित करना अथवा प्रदान करना होता था। इसके साथ ही उन्हें आध्यात्मिक और धार्मिक क्रिया-कलापों में सक्रिय रूप से मार्गदर्शन व सहयोग देना होता था। आज शिक्षा का अर्थ है- अध्ययन। अध्ययन ही अब शिक्षा अर्थ रह गया है जबकि शिक्षा का मूल उद्देश्य है - शारीरिक, मानसिक और भावात्मक विकास करना। शिक्षा के साथ मूल्य भी अनिवार्य रूप से जुड़े हुए हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि बिना मूल्य के शिक्षा का कोई औचित्य नहीं है। अतः मूल्य विहीन शिक्षा निरर्थक है। शिक्षा के तात्पर्य मूलतः व्यक्तित्व के समग्र विकास से है।

समस्या का औचित्य

मूल्यपरक शिक्षा का ध्येय व्यक्ति को सहायता प्रदान करना है जिससे कि वह कार्य करने के लिए स्वतंत्र और प्रभावशाली व्यक्तित्व का विकास कर सकें तथा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय

www.ignited.in

सामाजिक जीवन में सृजनात्मक रूप से भागीदारी निभा सके। मूल्यपरक शिक्षा व्यक्ति को यह क्षमता प्रदान करती है कि वह शीघ्रता से बदलते हुए सामाजिक जीवन का मुकाबला कर सकें तथा वैज्ञानिक आविष्कारों तथा जनसंचार से उत्पन्न समस्याओं के लिए तैयार हो सके और विश्व की समस्याओं के प्रति राष्ट्रीय दृष्टिकोण की अपेक्षा सार्वभौमिक दृष्टिकोण अपना सके। अतः बालकों में रूचिपूर्ण ढंग से विभिन्न शैक्षिक मूल्यों को उनेक आचरण में विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए। चूंकि श्रेष्ठ मानवीय मूल्य ही किसी देष की श्रेष्ठता के परिचायक होते हैं।

शोध विषय का चयन

भारत गाँव का देश है तथा 70 प्रतिशत भारतीय लोग गावों में निवास करते है। गाँव की प्रारम्भिक एवं निम्नतम इकाई व्यक्ति होता है। व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र के स्वरूप को मूर्त रूप मिलता है। ग्रामीण परिवेश से ही भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों का प्रारम्भ माना गया हैं जो कालान्तर में भारत में ही नही अपितु विश्व में अपनी सर्वोच्चता के लिए प्रसिद्ध हुई है। शोधार्थी ने वर्तमान परिवेश, परिस्थिति एवं भारतीय मूल्यों की उपादेयता को देखते हुए साथ ही साथ भारतीय संस्कृति की चेतना को जनमानस में झंकृत करने के लिए प्रस्तुत शोध विषय का चयन किया है।

समस्या कथन

अध्ययन की समस्या को संक्षिप्त रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है-''प्राथमिक विद्यालय स्तर पर बिजनौर जनपद के शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन''।

शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

प्राथमिक विद्यालय स्तर

प्राथमिक विद्यालय स्तर के अन्तर्गत कक्षा-1 से लेकर कक्षा-5 तक के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जाता है, तथा कक्षा-1 से कक्षा-5 तक की शिक्षा जहॉ प्रदान की जाती है, उसे प्राथमिक विद्यालय के नाम से जाना गया है।

बिजनौर जनपद

प्रदेश के मुरादाबाद मण्डल के 05 जनपदों में से 01 जनपद का नाम बिजनौर है। बिजनौर के पूरव में उत्तराखण्ड पौडी गढ़वाल, उधसिंह नगर, पश्चिम में मैरठ तथा मुजफ्फनगर, उत्तर में हरिद्वार तथा दक्षिण में अमरौहा, मुरादाबाद स्थित है। बिजनौर जनपद की जनसंख्या 3683896 (पुरूष-1921215 तथा महिला-1761498) है। बिजनौर जनपद का लिंगानुपात 913, सांक्षरता दर 70.43 तथा जनसंख्या वृद्धि दर 17.64 प्रतिशत है। यहा की कुल भौगोलिक क्षेत्र 449 स्कवायर किलो मीटर है। यहॉ की समस्त जनसंख्या में हिन्दु 55.18, मुस्लिम 43.04, सिंख 1.37, जैन 0.17 तथा जनजाति जौनसारी 0.04 प्रतिशत है। बिजनौर जनपद में 05 तहसील तथा 11 प्रखण्ड है। यहॉ 03 लोकसभा क्षेत्र हैं जिसमें एक पूर्ण संसदीय क्षेत्र (नगीना) तथा 02 खण्डित लोकसभा क्षेत्र (बिजनौर तथा अफजल) संसदीय क्षेत्र के साथ-साथ 08 विधानसभा क्षेत्र- (नजीवाबाद, धामपुर, नगीना, बढापुर, चाँदपुर, नुरपुर, बिजनौर तथा नैहटौर) है। बिजनौर जनपद में 1791 प्राथमिक विद्यालय तथा 821 माध्यमिक विद्यालय है जिसमें वित्तीय सहायता प्राप्त 56 माध्यमिक विद्यालय है।

शहरी एवं ग्रामीण

जहाँ पर सुविधा की समस्त चीजें उपलब्ध होती हैं और जहाँ के लोग सुव्यवस्थित ढंग से रहकर अपना जीवन यापन करते हैं उस क्षेत्र को शहरी क्षेत्र के नाम से सम्बोधित किया गया है तथा ग्रामीण परिवेष जहाँ पर सुविधाओं के अभाव को झेलते हुए लोग निवास करते हैं उसे ग्रामीण क्षेत्र के रूप में सम्बोधित किया गया है।

अध्यापक

''अध्यापक वह है जो छात्रों के ज्ञानोपार्जन में सहायक होता है, छात्रों का सर्वागीण विकास करता है, उनकी सामाजिक समस्याओं को पूरा करने में सहायता प्रदान करता है। अध्यापक का कार्य शिक्षा देना होता है तथा अच्छा अध्यापक वह समझा जाता है जो शिक्षण देने में व्यवहार कुशल हो।''

मूल्य

मूल्य से अभिप्राय किसी वस्तु की कीमत या उपयोगिता से है। भावात्मक दृष्टि से यह मानव के गुण को भी व्यक्त करता है। मूल्य से तात्पर्य शिक्षा प्रद अच्छे गुण और सद्आचरण से हैं। यह मनुष्य के जीवन तथा समाज के प्रत्येक आयाम से सम्बन्धित होते हैं तथा मनुष्य की इच्छाओं और आकांक्षाओं को नियंत्रित करने का श्रेष्ठ साधन है। मूल्य व्यक्ति या समूह को भौतिक एवं सामाजिक रूप से समायोजित करने का एक मात्र साधन है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के लिये शोधकर्ती ने निम्न उद्देश्यों को निर्धारित किया है-

www.ignited.in

1. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के समग्र मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
2. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के महिला एवं पुरुष अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
3. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
4. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
5. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
6. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
7. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
8. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
9. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर में शहरी व ग्राणीण अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
10. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
11. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के सौन्दर्यत्मक/कलात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
12. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
13. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
14. बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।

शोध परिकल्पाएँ

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाओं को समाहित कर सत्यापन किया जायेगा-

1. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर के सभी महिला एवं पुरूष अध्यापकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।
3. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।
5. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।
6. बिजनौर जनपद क्षेत्र मे प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों राजनैतिक मूल्यों मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं।
7. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।
8. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं।
9. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सौद्धान्तिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।
10. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।
11. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं।
12. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।
13. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

14. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी ग्रामीण अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। यह शैक्षिक समस्याओं को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है तथा उन्हें हल करने की विधियो की ओर संकेत करती है।

उपकरण- उपकरण के रूप में डा॰. शमीम करीम द्वारा निर्मित"अध्यापक मूल्य अनुसूची" (Teacher Value Inventory) को लिया गया है।

अध्ययन की परिसीमाएं

प्रस्तुत अध्ययन की सीमायें बिजनौर जनपद को निर्धारित किया गया है।बिजनौर जनपद के अन्तर्गत 05 तहसील तथा **11** प्रखण्ड स्तर के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों को ही इस शोध के अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया है तथा उनसे प्राप्त दत्तों के आधार पर शोध निष्कर्ष निकाले गये हैं।

न्यादर्श का चयन

यहाँ पर न्यादर्श के रूप में 300 शहरी और 300 ग्रामीण अध्यापक एवं अध्यापिकाओं को लिया गया है। इन अध्यापकों को विद्यालय वाइज लिया है ,जैसे 30 शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में से 5-5 शहरी 30 प्राथमिक विद्यालयों से 30 150 अध्यापक

शहरी 30 प्राथमिक विद्यालयों से 30 X 05=150 अध्यापिकाऐं

ग्रामीण 30 प्राथमिक विद्यालयों से 30 X 05=150 अध्यापक

ग्रामीण 30 प्राथमिक विद्यालयों से 30 X 05=150 अध्यापिकाऐं

न्यादर्श तालिका

क्षेत्र	शहरी क्षेत्र से चयनित अध्यापक एवं अध्यापिकाए		
	अध्यापक	अध्यापिकाएँ	योग
शहरी	150	150	30
योग			300
क्षेत्र	ग्रामीण क्षेत्र से चयनित अध्यापक एवं अध्यापिकाएँ		
	अध्यापक	अध्यापिकाएँ	योग
ग्रामीण	150	150	300
योग			300

उपकरणों का वितरण

अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर जो उपकरण (Tools) प्रयोग हेतु लिये गये हैं, वह "अध्यापक मूल्य अनुसूची" (Teacher Value Inventory) डॉ. समीम करीम द्वारा प्रतिपादित अनुसूची है, जो "All Part Vermon" पर आधारित है। इस अध्यापक मूल्य अनुसूची (TVI) का जो प्रयोग किया गया हैं, वह भारत में नियुक्त अध्यापकों के लिये किया गया हैं, यह हिन्दी तथा अंग्रेजी में तैयार किया गया हैं और इसमें 63 विषय वस्तु है। डॉ. समीम करीम का यह अध्यापक मूल्य अनुसूची एक ऐसा उपागम है, जो अध्यापक के 7 प्रकार के मूल्यों को निर्धारित करता है और उसका मूल्यांकन करता है, जो निम्नलिखित हैं -1. सौंदर्य शास्त्र 2. सैद्धान्तिक 3. धार्मिक 4. सामाजिक 5. आर्थिक 6. राजनैतिक 7. सम्पूर्ण मूल्य, ;

जैसी कि हम जानते है , प्रत्येक व्यक्ति मूल्यों की पद्धति या व्यवस्था से प्रेरित होते है , किसी एक के व्यक्तित्व का अध्ययन मूल्यों से किया जा सकता है , उसका बड़ा विस्तार हो सकता है।वर्तमान परिसूची सात प्रकार के मूल्यों के मापन के लिए बनाई गई है। इस परिसूची का निर्माण विशेष रूप से अध्यापकों के प्रयोगार्थ किया गया था तथा इसमें अध्यापकों के न्यादर्श को लिया जाता है।इस प्ररिक्षण के एकाशों को आलपोर्ट की मूल्यों की मापनी व गिलानी, मूल्य मापनी परीक्षण।

परिक्षण की विश्वसनीयताः-आंकडो का विलेषण का अर्थ है कि प्राप्त सामग्री का अर्थ व अंतनिर्हित कारको के लिए अध्ययन । इस प्रक्रिया के दौरान कठिन कारको को सरल भागो में विभाजित किया जाता है तथा उन्हें व्यवस्थित किया जाता है- व्याख्या के उद्देश्य से 600 अध्यापकों शहरी एवं ग्रामीण 300 ग्रामीण $ 300 शहरी अध्यापकों से भरी हुई प्रश्नावली लेने के बाद परीक्षक ने प्रत्येक अध्यापकों की प्रश्नावली को जांचा तथा अंक प्रदान किए ताकि उनके मूल्यों , आत्म-सम्प्रत्यय तथा समायोजन की जानकारी प्राप्त हो सके। डा॰. शमीम करीम द्वारा निर्मित अध्यापक मूल्यअनुसूची (Teacher Value Inventory) जो "All Part of Vermon" पर आधारित है , को लिया गया है। उसके बाद बिजनौर की ग्रामीण तथा शहरी अध्यापकों के मूल्यों, आत्म-सम्प्रत्यय तथा समायोजन का मध्यमान , प्रमाप विचलन, टी-मान तथा अलग-अलग निकाला गया।

प्राप्त आंकडे अपने आरंभिक रूप में अस्पष्ट, विस्तृत, अर्थहीन, उलझे हुए होते है। वर्गीकरण के बिना उनमें किसी सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग नहीं किया जा सकता है तथा न ही

www.ignited.in

उनके आधार पर कोई परिणाम या निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते है। अतः एकत्रित आंकडो की उपयोगिता की दृष्टि से सांक्षिप्त करना और उन्हें एक व्यवस्थित रूप देना आवश्यक है। इस प्रकार वर्गीकरण आंकडो को व्यवस्थित एवं संक्षिप्त करने की प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत समान एवं असमान गुणो के अनुसार आंकडो को इस प्रकार विभाजित करते है कि समान गुणो वाले आंकडे एक ही वर्ग में तथा असमान गुणो वाले आंकडे अन्य वर्गों में आ सके। ऐसा करने से अनुसंधान के आंकडो में स्पष्टता आ जाती है।

डॉ. एल.अंस के अनुसार- "प्रदत्तो को उनकी रूपता एवं समानता के अनुसार समूह अथवा वर्गाे में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया को परिभाषित रूप में वर्गीकरण कहा जाता है।

अवलोकन अथवा साक्षात्कार द्वारा प्राप्त आंकडो के आधार पर किसी सुनिश्चित निष्कर्षो पहुंचना कठिन ही नहीं वरन् प्रायः असम्भव होता है, क्योंकि सूचनाएं बड़ी ही जटिल, असम्बद्ध तथा बिखरे रूप में होती है जिनसे सरलता से नहीं समझा जा सकता है। उचित विवेचन के लिए आवश्यक है कि पहले सामग्री को सुसंगठित किया जाए।। उदाहरण के लिए हजारों व्यक्तियों की आयु, पेशा, शिक्षा, आर्थिक तथा पारिवारिक स्थिति के सम्बन्ध में एकत्रित किए गए, आंकडे यदि उसी अवस्था में रहें तो उनसे हम किसी परिणाम पर नहीं पहुंच सकते। निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए हमें दो प्रक्रियाएं करनी पड़ती है जिन्हें वर्गीकरण तथा सारणीयन कहते है।

अनुसंधान या शोध-कार्य में केवल तथ्यों को एकत्रित कर लेने से ही अध्ययन-विषय का वास्तविक अर्थ, कारण तथा परिणाम स्पष्ट नहीं हो सकता है जब तक कि उन एकत्रित तथ्यों को सुव्यवस्थित करके उनका विश्लेषण व व्याख्या न की जाए। गणितशास्त्री जे.एच. प्वायन्केयर ने ठीक ही कहा है कि जिस प्रकार एक मकान पत्थरों से बनता है, उसी प्रकार विज्ञान का निर्माण तथ्यों से होता है, पर केवल तथ्यो का संकलन उसी भांति विज्ञान नहीं है जैसे कि पत्थरों का एक ढेर मकान नहीं है।

अतः वैज्ञानिक निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि एकत्रित तथ्यों को सुव्यवस्थित करके अपना विश्लेषण व व्याख्या की जाए ताकि विषय के सम्बन्ध में सही जानकारी प्राप्त हो सके। वर्गीकरण के द्वारा न केवल विस्तृत तथ्यों को एक संक्षिप्त रूप प्राप्त हो जाता है वरन् एक समान तथ्यों को असमान तथ्यों से अलग रखना भी सम्भव होता है।

तालिका 1 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों के समग्र मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	महिला		पुरूष		टी-वेल्यू	सार्थकता का स्तर
		Mean M_1	SD SD_1	Mean M_2	SD SD_2		
समग्र मूल्य	600	10.70	1;80	10.00	2.07	2.00	0.05

यहाँ

M1 – महिला अध्यापकों का मध्यमान

M2 – पुरूष अध्यापकों का मध्यमान

S.D. 1 – महिला अध्यापकों का प्रमाणिक विचलन

S.D. 2 – पुरूष अध्यापकों का प्रमाणिक विचलन

विश्लेषण एवं व्याख्या - उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों के आधार पर समग्र मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि महिला अध्यापकों कुल मध्यमान 10.70 व पुरूष अध्यापकों का कुल मध्यमान 10.00 है तथा महिला अध्यापकों का S.D1.80 व पुरूष अध्यापकों का S.D. 2.07 है। t-value2.00 है जो कि 0.01 तथा 0.05 से अधिक इन प्राप्तांकों से टी का मान परिक्षण मूल्य 2.00 पाया गया जो 600 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला अध्यापकों में पुरूष अध्यापकों में समग्र मूल्य पुरूष अध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

तालिका 2 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों के सैधांतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	महिला		पुरूष		टी-वेल्यू	सार्थकता का स्तर
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
सैद्धांतिक मूल्य	600	10.09	2.06	10.08	2.00	1.57	0-05

विश्लेषण एवं व्याख्या- उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों में अध्ययनरत अध्यापकों के आधार पर सैद्धांतिक मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि महिला अध्यापकों कुल मध्यमान 10.09 व पुरूष अध्यापकों

का कुल मध्यमान 10.08 है तथा महिला अध्यापकों का S.D. 2.06 व पुरूष अध्यापकों का S.D.2.00 है। t-value 1.57 है जो कि 0. 01 तथा 0.05 से अधिक इन प्राप्तांकों से टी का मान परिक्षण मूल्य 1.57 पाया गया जो 600 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों में अध्ययनरत अध्यापकों में सैद्धांतिक मूल्य अध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

तालिका 3 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	महिला		पुरूष		टी-वेल्यू	सार्थकता का स्तर
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
आर्थिक मूल्य	600	11.62	2.03	10.30	1.20	0.30	0-05

विश्लेषण एवं व्याख्या - उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों में अध्ययनरत अध्यापकों के आधार पर आर्थिक मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि महिला अध्यापकों कुल मध्यमान 11.62 व पुरूष अध्यापकों का कुल मध्यमान 10.30 है तथा महिला अध्यापकों का S.D. 2.03 व पुरूष अध्यापकों का S.D. 1.20 है। t-value 0.30 है जो कि 0.01 तथा 0.05 से कम है। इन प्राप्तांकों से टी का मान परिक्षण मूल्य 0.30 पाया गया जो 600 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य से कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों में अध्ययनरत महिला अध्यापकों में आर्थिक मूल्य पुरूष अध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

तालिका 4 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	महिला		पुरूष		टी-वेल्यू	सार्थकता का स्तर
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
सौन्दर्यात्मक मूल्य	600	10.62	1.95	10.30	2.40	0.30	0-05

विश्लेषण एवं व्याख्या - उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों में अध्ययनरत महिला अध्यापकों एवं पुरूष अध्यापकों के आधार पर सौन्दर्यात्मक मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि महिला अध्यापकों कुल मध्यमान 10.62 व पुरूष अध्यापकों का कुल मध्यमान 10.30 है तथा महिला अध्यापकों का S.D. 1.95 व पुरूष अध्यापकों का S.D. 2.40 है। t-value 0.30 है जो कि 0.01 तथा 0.05 से कम है। इन प्राप्तांकों से टी का मान परिक्षण मूल्य 0.30 पाया गया जो 600 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य से कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों में अध्ययनरत महिला अध्यापकों में सौन्दर्यात्मक मूल्य पुरूष अध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

तालिका 5 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	महिला		पुरूष		टी-वेल्यू	सार्थकता का स्तर
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
सामाजिक मूल्य	600	10.00	1.89	3.88	1.87	1.71	0-05

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों में अध्ययनरत महिला अध्यापकों एवं पुरूष अध्यापकों के आधार पर सामाजिक मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि महिला अध्यापकों कुल मध्यमान 10.00 व पुरूष अध्यापकों का कुल मध्यमान 3.88 है तथा महिला अध्यापकों का S.D.1.89 व पुरूष अध्यापकों का S.D.1.87 है। t-value 1.71 है जो कि 0.01 तथा 0.05 से कम है। इन प्राप्तांकों से टी का मान परिक्षण मूल्य 1.71 पाया गया जो 600 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य से कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों में अध्ययनरत महिला अध्यापकों में सामाजिक मूल्य पुरूष अध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

तालिका 6 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

www.ignited.in

मूल्य का प्रकार	N	महिला		पुरूष		टी-वेल्यू	सार्थकता का स्तर
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
राजनैतिक मूल्य	600	10.15	2.02	11.03	1.57	0.36	0-05

विश्लेषण एवं व्याख्या - उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिलाएवं पुरूष अध्यापकों में अध्ययनरत महिला अध्यापकों एवं पुरूष अध्यापकों के आधार पर राजनैतिक मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि महिलाअध्यापकों कुल मध्यमान 10.15 व पुरूष अध्यापकों का कुल मध्यमान 11.03 है तथा महिला अध्यापकों का S.D. 2.02 व पुरूष अध्यापकों का S.D. 1.57 है। t-value 0.36 है जो कि 0. 01 तथा 0.05 से कम है। इन प्राप्तांकों से टी का मान परिक्षण मूल्य 0.34 पाया गया जो 600 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य से कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों में अध्ययनरत विवाहित अध्यापकों में राजनैतिक मूल्य पुरूष अध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

तालिका 7 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरूष अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	महिला		पुरूष		टी-वेल्यू	सार्थकता का स्तर
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
धार्मिक मूल्य	600	10.73	2.70	11.75	1.53	0.41	0-05

विश्लेषण एवं व्याख्या - उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिलाएवं पुरूष अध्यापकों में अध्ययनरत महिला अध्यापकों एवं अविवाहित अध्यापकों के आधार पर धार्मिकमूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि महिला अध्यापकों कुल मध्यमान 10.73 व अविवाहित अध्यापकों का कुल मध्यमान 10.73 है तथा महिला अध्यापकों का S.D. 2.70 व अविवाहित अध्यापकों का S.D. 1.53 है। t-value 0.41 है जो कि 0.01 तथा 0.05 से कम है। इन प्राप्तांकों से टी का मान परिक्षण मूल्य 0.60 पाया गया जो 600 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य से कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला एवं पुरूष अध्यापकों में अध्ययनरत महिला अध्यापकों में धार्मिक मूल्य पुरूष अध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

1. समग्र मूल्य- इसके आधार पर महिला का कुल मध्यमान 10.70 व पुरूष अध्यापकों का मध्यमान 10.00 है। महिला अध्यापकों का S.D. 1.80 व पुरूष अध्यापकों का S.D. 2.07 है। ज अंसनम 2.00 है जो कि 0.01 से अधिक तथा 0.05 से कम है इससे यह पता चलता है कि महिला अध्यापकों तथा पुरूष अध्यापकों के समग्र मूल्यों में सार्थक अन्तर है।
2. सैद्धांतिक मूल्य- इसके आधार पर महिला का कुल मध्यमान 10.09 व पुरूष अध्यापकों का मध्यमान 10.08 है। महिला अध्यापकों का S.D. 2.06 व पुरूष अध्यापकों का S.D. 2.00 है। ज अंसनम 1.57 है जो कि 0.01 से अधिक तथा 0.05 से कम है इससे यह पता चलता है कि महिला अध्यापकों तथा पुरूष अध्यापकों के सैद्धंातिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है।
3. आर्थिक मूल्य - इसके आधार पर महिला अध्यापकों का कुल मध्यमान 11.62 व पुरूष अध्यापकों का मध्यमान 10.30 है। महिला अध्यापकों का S.D. 3.09 व पुरूष अध्यापकों का S.D. 2.03 है। t-value 1.20 है जो कि 0.01 तथा 0.05 दोनो से कम है इससे यह पता चलता है कि महिला अध्यापकों तथा पुरूष अध्यापकों के आर्थिक मूल्य में सार्थक अन्तर है।
4. सौन्दर्यात्मक मूल्य- इसके आधार पर महिला अध्यापकों का कुल मध्यमान 11.62 व पुरूष अध्यापकों का मध्यमान 11.54 है। महिला अध्यापकों का S.D. 2.95 व पुरूष अध्यापकों का S.D. 2.71 है। t-value 0.37 है जो कि 0.01 तथा 0.05 दोनो से कम है इससे यह पता चलता है कि महिला अध्यापकों तथा पुरूष अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य में सार्थक अन्तर है।
5. सामाजिक मूल्य- इसके आधार पर महिला अध्यापकों का कुल मध्यमान 10.00 व पुरूष अध्यापकों का मध्यमान 3.88 है। महिला अध्यापकों का S.D. 1.89 व पुरूष अध्यापकों का S.D. 1.87 है। tvalue 1.71 है जो कि 0.01 तथा 0.05 दोनो से अधिक है इससे यह पता चलता है कि महिला अध्यापकों तथा पुरूष अध्यापकों के सामाजिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

6. राजनैतिक मूल्य -इसके आधार पर महिला अध्यापकों का कुल मध्यमान 10.15 व पुरूष अध्यापकों का मध्यमान 11.03 है। महिला अध्यापकों का S.D. 2.02 व पुरूष अध्यापकों का S.D. 1.57 है। t-value 0.36 है जो कि 0.01 तथा 0.05 दोनो से कम है इससे यह पता चलता है कि महिला अध्यापकों तथा पुरूष अध्यापकों के राजनैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर है।
7. धार्मिक मूल्य - इसके आधार पर महिला अध्यापकों का कुल मध्यमान 10.73 व पुरूष अध्यापकों का मध्यमान 11.75 है। महिला अध्यापकों का S.D. 2.70 व पुरूष अध्यापकों का S.D. 1.53 है। t-value 0.41 है जो कि 0.01 तथा 0.05 दोनो से कम है इससे यह पता चलता है कि महिला अध्यापकों तथा पुरूष अध्यापकों के धार्मिक मूल्य में सार्थक अन्तर है।

तालिका 8 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के समग्र मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	शहरी अध्यापक		ग्रामीण अध्यापक		टी-वेल्यू	सार्थकता का स्तर
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
समग्र मूल्य	600	111.91	2.51	116.41	3.24	3.70	0.01, 0.05

यहाँ

M1 – शहरी अध्यापकों का मध्यमान

M2 – ग्रामीण अध्यापकों का मध्यमान

S.D. 1 – शहरी अध्यापकों का प्रमाणिक विचलन

S.D. 2 – ग्रामीण अध्यापकों का प्रमाणिक विचलन

विश्लेषण एवं व्याख्या - उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों में अध्यापकों के आधार पर मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि शहरी अध्यापकों कुल मध्यमान 111.91 व ग्रामीण अध्यापकों का कुल मध्यमान 116.41 है तथा शहरी अध्यापकों का S.D. 2.51 व ग्रामीण अध्यापकों का S.D. 3.24 है। t-value 3.70 है जो कि 0.01 तथा 0.05 से अधिक है जिसके आधार पर यह पता चलता है कि शहरी अध्यापकों तथा ग्रामीण अध्यापकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर है। अतः जिसके आधार पर परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

तालिका 9 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के सैद्धधंतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	शहरी अध्यापक		ग्रमीण अध्यापक		टी-वेल्यू	सार्थकता का प्रकार
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
सैधांतिक मूल्य	600	25.80	3.71	25.80	2.19	2.09	NS

विश्लेषण एवं व्याख्या - उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों में अध्ययनरत शहरी अध्यापकों एवं ग्रामीण अध्यापकों के आधार पर सैद्धंातिक मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि शहरी अध्यापकों कुल मध्यमान 25.80 व ग्रामीण अध्यापकों का कुल मध्यमान 25.80 है तथा शहरी अध्यापकों का S.D. 3.71 व ग्रामीण अध्यापकों का S.D. 2.19 है। t-value 2.09 है जो कि 0. 01 से अधिक है तथा 0.05 से कम है। जिसके आधार पर यह पता चलता है कि शहरी अध्यापकों में सैद्धंातिक मूल्य ग्रामीण अध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

तालिका 10 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	शहरी अध्यापक		ग्रामीण अध्यापक		टी-वेल्यू	सार्थकता का प्रकार
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
आर्थिक मूल्य	600	27.20	4.11	21.09	3.02	0.70	0.01 0.05

मूल्य का प्रकार	N	शहरी अध्यापक		ग्रामीण अध्यापक		टी-वेल्यू	सार्थकता का प्रकार
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
आर्थिक मूल्य	600	27.20	4.11	21.09	3.02	0.70	0.01 0.05

विश्लेषण एवं व्याख्या - उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों में अध्ययनरत शहरी अध्यापकों एवं ग्रामीण अध्यापकों के आधार पर आर्थिक मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर

www.ignited.in

ज्ञात होता है कि शहरी अध्यापकों कुल मध्यमान 27.20 व ग्रामीण अध्यापकों का कुल मध्यमान 21.09 है तथा शहरी अध्यापकों का S.D. 4.11 व ग्रामीण अध्यापकों का S.D. 3.02 है। t-value 0.70 है जो कि 0.01 एंव 0.05 से कम है। जिसके आधार पर यह पता चलता है कि शहरी अध्यापकों मे ं आर्थिक मूल्य ग्रामीण अध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

तालिका 11 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	शहरी अध्यापक		ग्रामीण अध्यापक		टी-वेल्यू	सार्थकता का स्तर
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
सौन्दर्यात्मक मूल्य	600	25.50	3.72	25.31	3.60	1.60	0.01 0.05

विश्लेषण एवं व्याख्या - उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों में अध्ययनरत शहरी अध्यापकों एवं ग्रामीण अध्यापकों के आधार पर सौन्दर्यात्मक मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि शहरी अध्यापकों कुल मध्यमान 25.50 व ग्रामीण अध्यापकों का कुल मध्यमान 25.31 है तथा शहरी अध्यापकों का S.D.3.72 व ग्रामीण अध्यापकों का S.D. 3.60 है। t-value 1.60 है जो कि 0.01 से अधिक तथा 0.05 से कम है इससे यह पता चलता है कि शहरी अध्यापकों तथा ग्रामीण अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य में सार्थक अन्तर है।

तालिका 12 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	शहरी अध्यापक		ग्रामीण अध्यापक		टी-वेल्यू	सार्थकता का स्तर
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
सामाजिक मूल्य	600	20.51	3.80	25.01	3.82	1.00	0.01 0.05

विश्लेषण एवं व्याख्या - उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों में अध्ययनरत शहरी अध्यापकों एवं ग्रामीण अध्यापकों के आधार पर सामाजिक मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि शहरी अध्यापकों कुल मध्यमान 20.51 व ग्रामीण अध्यापकों का कुल मध्यमान 25.01 है तथा शहरी अध्यापकों का S.D.3.80 व ग्रामीण अध्यापकों का S.D. 3.82 है। t-value 1.00 है जो कि 0.01 से अधिक तथा 0.05 से कम है इससे यह पता चलता है कि शहरी अध्यापकों तथा ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्य में सार्थक अन्तर है।

तालिका 13 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	शहरी अध्यापक		ग्रामीण अध्यापक		टी-वेल्यू	सार्थकता का स्तर
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
राजनैतिक मूल्य	600	24.01	4.56	22.19	3.17	0.12	0.01 0.05

विश्लेषण एवं व्याख्या -उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों में अध्ययनरत शहरी अध्यापकों एवं ग्रामीण अध्यापकों के आधार पर राजनैतिक मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि शहरी अध्यापकों कुल मध्यमान 24.01 व ग्रामीण अध्यापकों का कुल मध्यमान **22.19** है तथा शहरी अध्यापकों का S.D.4.56 व ग्रामीण अध्यापकों का S.D. 3.17है। t-value 0.12 है जो कि 0.01 से अधिक तथा 0.05 से कम है जिसके आधार कि शहरी अध्यापकों तथा ग्रामीण अध्यापकों के राजनैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर है।

तालिका 14 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

मूल्य का प्रकार	N	शहरी अध्यापक		ग्रामीण अध्यापक		टी-वेल्यू	सार्थकता का स्तर
		Mean M1	SD SD1	Mean M2	SD SD2		
धार्मिक मूल"	600	112.61	21.30	155.19	15.10	0.02	0.01, 0.05

विश्लेषण एवं व्याख्या -उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों में अध्ययनरत शहरी अध्यापकों एवं ग्रामीण अध्यापकों के आधार पर धार्मिक मूल्यों प्राप्तांकों के अवलोकन उपरोक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि शहरी अध्यापकों कुल मध्यमान 112.61 व ग्रामीण अध्यापकों का कुल मध्यमान 155.19 है तथा शहरी अध्यापकों का S.D.21.30 व ग्रामीण अध्यापकों का S.D.

15.10 है। t-value 0.02 है जो कि 0.01 तथा 0.05 से कम है जिसके आधार पर यह पता चलता है कि शहरी अध्यापकों तथा ग्रामीण अध्यापकों के धार्मिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः जिसके आधार पर परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अध्ययन के निष्कर्ष

बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर के सभी महिला एवं पुरूष अध्यापकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

HYPOTHESIS	TABLE
H01: बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर के सभी महिला एवं पुरुष अध्यापकों के समग्र मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।	तालिका 4.1.1 महिला एवं पुरुष अध्यापकों के समग्र मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर के सभी महिला एवं पुरुष अध्यापकों के समग्र आत्म प्रत्यय मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।अतः परिकल्पना H01 सिद्ध होती है।
H02: बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।	तलिका 4.1.2 महिला एवं पुरुष अध्यापकों के सैद्धांतिक मूल्य मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि अतः परिकल्पना H02 सिद्ध होती है।
H03: बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।	तालिका 4.1.3 महिला एवं पुरुष अध्यापकों की आर्थिक मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन। से सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना H03 सिद्ध होती है।
H04 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।	तालिका 4.1.4 महिला एवं पुरुष अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन। से सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना H04 सिद्ध होती है।
H05 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।	तालिका 4.1.5 महिला एवं पुरुष अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना H05 सिद्ध होती है।

www.ignited.in

H06 बिजनौर जनपद क्षेत्र मे प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष अध्यापकों राजनैतिक मूल्यों मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं।	तालिका 4.1.6 महिला एवं पुरुष अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद क्षेत्र मे प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों राजनैतिक मूल्यों मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं। अतः परिकल्पना H06 सिद्ध होती है।
H07 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर महिला एवं पुरुष अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।	तालिका 4.1.7 महिला एवं पुरुष अध्यापकों के धार्मिक मूल्य का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी-वैल्यू मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना H07 सिद्ध होती है।
H08 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के नैतिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं।	तालिका 4.1.8 शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के समग्र मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है किबिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के समग्र मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं। अतः परिकल्पना H08 सिद्ध होती है।
H09 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सौद्धान्तिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।	तालिका 4.1.9 शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के सैद्धांतिक मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना H09 सिद्ध होती है।
H10 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।	तालिका 4.1.10 शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों की आर्थिक मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना H010 सिद्ध होती है।

H11 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं।	तालिका 4.1.11 शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं। अतः परिकल्पना H011 सिद्ध होती है।
H12 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।	तालिका 4.1.12 शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना H012 सिद्ध होती है।
H13 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।	तालिका 4.1.13 शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना H013 सिद्ध होती है।
H14 बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी ग्रामीण अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर हैं।	तालिका 4.1.14 शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन से सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी ग्रामीण अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर हैं। अतः परिकल्पना H014 सिद्ध होती है।

शैक्षिक निहितार्थ

अध्ययन के परिणाम का प्रयोग हम अपने व्यवहारिक जीवन में कर सकते है। मूल्य, आत्म-सम्प्रत्यय तथा समायोजन का अध्ययन करके छात्र एवं अध्यापकों को उचित मार्गदर्शन कर सकते है तथा वे अपनी दिन-प्रतिदिन के जीवन की समस्याओं का समाधान कर सकते है। इस अध्ययन द्वारा हमें पता चलता है कि अध्यापकों की मूल्य का विकास किस सीमा तक हो चुका है तथा कितना विकसित होना अभी बाकी है। वे अपने स्वयं के बारे में क्या सोचती है। वे किसी भी परिस्थिति या मुसीबत में अपने मूल्य समायोजन तथा आत्म-प्रत्यय द्वारा उस चुनौती का सामना कर सकती है। यदि प्राथमिक विद्यालय की छात्रा की मूल्य तथा समायोजन करने की क्षमता जितनी अधिक होगी वह अपने वातावरण, घर-परिवार तथा आस-पड़ोस में अपने आपको आसानी से ढाल सकती है। इस अध्ययन में निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ है

1. परामर्शदाता व्यक्तिगत रूप से अध्यापकों के नैतिक मूल्यों तथा समायोजन करने में सहायक हो सकते है।
2. वे आत्म-सम्प्रत्यय तथा नैतिक मूल्यों के आधार पर शैक्षिक तथा व्यवहारिक क्षेत्रों का चुनाव करने में सहायता करते है।
3. शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों व्यक्तिगत समायोजन तथा संवेगात्मक आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है।
4. माता-पिता तथा अध्यापक अपने बच्चों का आत्म-प्रत्यय, मूल्य तथा समायोजन स्तर को जान सकते है।

www.ignited.in

5. यह वर्तमान शोधकार्य अध्यापक, समाज की सहायता करता है ताकि उनके बच्चों की योग्यता एवं क्षमताओं को जाना जा सकता है।
6. वे अध्यापकों के मूल्य तथा समायोजन को सुचारू रूप से व्यवस्थित शिक्षा तथा सुविधाएं प्रदान की जा सकती है।
7. मूल्य, आत्म-सम्प्रत्यय तथा समायोजन का अध्ययन करके छात्र एवं अध्यापकों को उचित मार्गदर्शन कर सकते है तथा वे अपनी दिन-प्रतिदिन के जीवन की समस्याओं का समाधान कर सकते है का अध्ययन कर सकते हैं
8. अध्यापकों की मूल्य का विकास किस सीमा तक हो चुका है तथा कितना विकसित होना अभी बाकी है। वे अपने स्वयं के बारे में क्या सोचती है।
9. वे किसी भी परिस्थिति या मुसीबत में अपने मूल्य समायोजन तथा आत्म-प्रत्यय द्वारा उस चुनौती का सामना कर सकती है।
10. यदि प्राथमिक विद्यालय के छात्र की मूल्य तथा समायोजन करने की क्षमता जितनी अधिक होगी वह अपने वातावरण, घर-परिवार तथा आस-पड़ोस में अपने आपको आसानी से ढाल सकता है।
11. समाज के विकास की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक शिक्षक प्रशिक्षण के प्रकार को भी ध्यान में रखा है जो सामाजिक परिवेश के लिए सम्मान और सांस्कृतिक विविधता के लिए सम्मान दिखाता है।
12. शिक्षक और, विस्तार से, शिक्षक प्रशिक्षण, छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण और कार्यों को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
13. एक प्रशिक्षित शिक्षक जिसमें जागरूकता की विकसित भावना और बदलते समाज के प्रति प्रतिबद्धता है, जो अपने शिक्षण कार्य को प्रतिबिंबित करने में सक्षम है। ताकि इसे रूपांतरित किया जा सके और एक अर्थपूर्ण अधिगम सूत्रधार बनाया जा सके। इस संदर्भ में, एक स्थायी, अंतरसांस्कृतिक समाज को प्राप्त करने में मदद करने के लिए युवा छात्रों के दृष्टिकोण और कार्यों को आवश्यक रूप से एक अंतिम लक्ष्यरू एक बेहतर समाज के ढांचे के भीतर देखा जाना चाहिए।

भावी शोध हेतु सुझावः

1. वर्तमान अध्ययन में शोधकर्ता ने शोधकार्य को बिजनौर जनपद तक ही सीमित रखा है। यह भविष्य में उत्तर प्रदेष राज्य के अन्य जनपदो में व राज्य स्तर पर भी किया जा सकता है।
2. वर्तमान अध्ययन में बिजनौर जनपद के राजकीय व प्राथमिक विद्यालय को लिया गया है। अतः भविष्य में शोध हेतु उत्तर प्रदेष के राजकीय व प्राथमिक विद्यालय का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. वर्तमान शोध प्राथमिक विद्यालय स्तर एवं अध्यापकों पर कार्यरत अध्यापक व अध्यापिकाओं के ऊपर किया गया है। ये अध्ययन प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों पर भी किया जा सकता है।
4. वर्तमान शोध में शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों को सम्मलित किया गया है। ये भविष्य में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति की अध्यापकों को लेकर किया जा सकता है या सामान्य विद्यार्थी एवं असामान्य विद्यार्थियों को लेकर तुलनात्मक रूप से अध्ययन किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यालय स्तर की 600 अध्यापकों को ही सम्मलित किया है। अतः भविष्य में न्यादर्श की संख्या को आवश्यकता अनुसार घटाया बढाया जा सकता है।

संदर्भ

1 सरीन एवं सरीन - 'शैक्षिक अनुसंधान विधियां", अग्रवाल, पब्लिकेशन्स, आगरा 2007-08

2 शर्मा, आर.ए.- "शिक्षा अनुसंधान", इण्डरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ (उ.प्र.) 1985-86

3 पाण्डे, गोविन्दचन्द्र - "मूल्य मीमांसा", राजस्थान हिन्दी जयपुर 1973

4 श्री शरण- "अभिनव नैतिक शिक्षा", आधुनिक प्रकाशन दिल्ली 1997

5 ढौलियाल फाटक, - "शैक्षिक अनुसंधान विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी सच्चिदानन्द अरविन्द ग्रन्थ अकादमी जयपुर 1982

6 सिंह, मनोज कुमार-शिक्षा और समाज आदित्य पब्लिशर्स, बीमा मध्य प्रदेश 1998

7 मिश्र,करूणाशंकर-मूल्य शिक्षण भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2005-06

8 नेगी, सुरेन्द्रसिंह- "नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता, आदित्य पब्लिशर्स मध्यप्रदेश 2000

9 कपिल, एच.के. - "अनुसंधान विधियाँ, हरप्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा

Corresponding Author

आरती शुक्ला*

शोधार्थी, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश

www.ignited.in